दावत व तबलीग के अहम उसूल

मौलाना जलील अहसन नदवी रह.

राहे अमल हिन्दी.

‘नोट:- हदीष की रिवायत का खुलासा है.’

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

1] बुखारी व मुस्लिम

रावी हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसउद (रदी) जुमेरात के दिन लोगों को नसीहत किया करते थे, तो उन्से एक आदमी ने कहा, ऐ अबू अब्दुर्रहमान! मेरी चाहत है के आप हम लोगों को हर दिन वअज़ और नसीहत किया करें. उन्होंने कहा हर दिन तकरीर करने से जो चीज़ मुझे रोकती है वो ये है की तुम उकता जाओगे और मै तुम्हें उकता देना पसन्द नहीं करता मै नागे देकर वअज़ और नसीहत करता हूं जैसे की रसूलुल्लाहﷺ हम को नागा देकर नसीहत फरमाते थे और आपﷺ ऐसा इसलिए करते थे की कहीं हम लोग उकता ना जाए. आपﷺ और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसउद (रदी) के अमल से जो बात साबित होती है वो ये है की दीन की तबलीग करने वाले लोगों को किसी के सिर पर सवार होकर वअज़ और नसीहत

नहीं करनी चाहिए बल्कि हालत को देखना चाहिए, मौका और माहोल देखना चाहिए, और उस किसान की तरह रहना चाहिए जो हर वकत बारिश का इन्तिज़ार करता है, और जैसे ही बारिश होती है तुरन्त ज़मीन को तैयार करने मै लग जाता है. तो ना तो बे-मौका तबलीग करना सही है और ना ये बात सही है की आदमी मौका की तलाश से गाफिल रहे मौके आते रहें और ये अपने वकार की नाप तौल मै उन्हें बरबाद करता रहे.

2] बुखारी, रावी हज़रत इकराम रदी.

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रदी) ने फरमाया की हर हफ्ता एक बार वअज़ किया करो और दो बार कर सकते हो, और तीन बार से ज्यादा वअज़ मत कहना और इस कुरआन से लोगों को ना फेरना और ऐसा कभी ना हो की तुम लोगों के पास पहुंचो और वो अपनी किसी बात मै मशगूल हों और तुम अपना वअज़ शुरू कर दो और उन्की बात काट दो, अगर तुम ऐसा करोगे तो उन्को वअज़ और नसीहत से फेर दोगे, बल्कि ऐसे मौके पर खामोशी अपनाओ, और जब उन्के अन्दर चाहत देखो और वो तुमसे वअज़ करने के लिए कहें तो तुम

वअज़ करो. और देखो! मुसज्जअ मुकफ्फअ इबारतें बोलने से बचो (यानी मुश्किल शब्द ना बोलो जो समझ मै ना आए) क्योंकि मैने आपﷺ और उन्के साथियों को देखा है की वो तकल्लुफ के साथ शब्द नहीं बोला करते थे.

एक हदीस इमाम सरखसी (रह) ने मबसूत मै नकल किया है जिस्मे आपﷺ ने फरमाया ऐसा ढंग ना अपनाओ की उस्की वजह से लोग अल्लाह की बन्दगी से नफरत करने लगे. ‘जब वो मुतालबा करें’ का मतलब ये है की वो जुबान से अपनी ख्वाहिश का इज़हार करें, उन्के चेहरे से अन्दाज़ा हो जाए की अब दीन की बात सुनने के मूड मै है तब अपनी बात कहनी चाहिए.

3] किताबुल खिराज, रावी इमाम अबू युसूफ

जब ज़कात फर्ज़ हुई और रसूलुल्लाहﷺ को हुक्म हुआ की वो लोगों से जकात वुसूल करें, तो आपﷺ ने जकात वुसूल करने के लिए एक आदमी को मुकर्रर किया और उसे ये वसिय्यत की, देखो! लोगों के बेहतरीन माल जिससे उन्के दिलों का संबंध है मत लेना, तुम बूढी ऊँटनियाँ लेना और ऐसी ऊँटनियाँ लेना जिन के बच्चे ना हुए हों, और ऐबदार ऊँटनियाँ लेना.

चुनाचे ये जकात वसूल करने वाला गया और आपﷺ की हिदायत के मुताबिक लोगों के जानवरों मै से ज़कात वसूल की, यहां तककि वो एक अरब दीहाती के पास पहुंचा और उसे बताया की अल्लाह ने अपने रसूलﷺ को हुक्म दिया है की वो लोगों से जकात वसूल करें, ये ज़कात उन्की गंदगी को दूर करेगी और ईमान को बढाएगी, उस आदमी ने ज़कात वसूल करने वाले से कहा ये हमारे जानवर है तुम जाओ और उन्मे से लेलो उसने बूढी ऐबदार और बे-बच्चा ऊँटनियाँ लेली, तो उस आदमी ने कहा की तुमसे पहले हमारे ऊँटों मै से अल्लाह का हक वसूल करने वाला कोई नहीं आया. अल्लाह की कसम! तुम्हें तो बेहतरीन ऊँट लेने होंगे. (भला अल्लाह के हुज़ूर मै खराब चीज़ पेश की जाएगी?). अगर आपﷺ पहले ही दिन से लोगों के बेहतरीन माल जकात मै वुसूल करते तो हो सकता था की लोग इस हुक्म के खिलाफ बगावत कर देते, लेकिन आहिस्ता आहिस्ता जब लोगों के अन्दर दीन ने अपनी जडें जमा लीं और उन्की तरबियत हो गई, तब मदीना से बहुत दूर दीहात मै बसने वाले लोगों का ये हाल हुआ की वो जकात मै बेहतरीन माल लेने के लिए कहते.

4] बुखारी, रावी हज़रत अनस रदी.

रसूलुल्लाहﷺ जब कोई बात फरमाते तो उस्को तीन बार दुहराते (जब ज़रूरत महसूस करते) ताकि वो बात लोगों की समझ मै अच्छी तरह आ-जाए. हर जुबान मै बोलने और तकरीर करने के ढंग होते है, उन्हें जानना ज़रूरी है उस्का मकसद तो लागों के दिलों मै अपनी बात उतारनी होती है. सुनने वाले जिस किस्म के हों उसी लिहाज़ से जुबान व बयान अपनाना होगा. कम पढे लिखे लोगों के सामने फलसफियाना अन्दाज़ मै बोलना और मुश्किल शब्द और तर्कीबें इस्तेमाल करना दावत को बेनतीजा बनाना है. आपﷺ के बारे मै हज़रत आयशा (रदी) फरमाती है अबू दाउद यानी आपकी तकरीर साफ और वाज़ेह (स्पष्ट) होती थी, जो सुनता समझ जाता.

5] किताबुल खिराज, रावी इमाम अबू युसूफ

हज़रत अली रदी. ने फरमाया की दिलों की कुछ ख्वाहिशें और मैलानात होते है और किसी वकत वो बात सुनने के लिए तैयार रहते है और किसी वकत उस्के लिए तैयार नहीं रहते तो लोगों के दिलों मै उन मेलानात के अन्दर से दाखिल हो

और उस वकत अपनी बात कहो जब की वो सुनने के लिए तैयार हों, इसलिए की दिल का हाल ये है की जब उस्को किसी बात पर मजबूर किया जाता है तो वो अंधा हो जाता है (और बात को कुबूल करने से इन्कार कर देता है).

6] किताबुल खिराज

बेहतरीन आलिम वो है जो लोगों को अपनी तकरीर और वअज़ से अल्लाह की रहमत से मायूस नहीं करता और ना अल्लाह की नाफरमानी (अवज्ञा) के लिए उन्हें छूट देता है और ना अल्लाह के अज़ाब से उन्हें बेखौफ बनाता है. मतलब ये है की ऐसे अन्दाज़ मै तकरीर करनी की जिस्के नतीजे मै लोग अपनी मुकती और अल्लाह की रहमत से मायूस हो जाए सही नहीं है और ना ये ठीक है की लोगों को अल्लाह की गफूरूर्रहीमी और आपﷺ की शिफाअत का गलत मतलब बता-बता कर उन्हें अल्लाह की नाफरमानी के लिए बहादुर और बेबाक बना दिया जाए. सही तरीका ये है की दोनों पहलू सामने लाए ताकि ना मायूसी पैदा हो और ना बेखौफी.